”पष्चिम बंगाल का आर्थिक विकास“

नोबल सम्मानित बी.एस. नायपाल ने हाल ही में वक्तव्य दिया कि ”मार्क्सवाद को अपनाने से पहले तक बंगाल आर्थिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में भारत में सबसे आगे था। इसने मार्क्सवाद को 1971 ई. के दुर्भाग्यषाली रूस की तरह अपनाया और स्वतः बर्बाद हो गया। बंगाल की आर्थिक बढ़त समाप्त हुई और ऐसा ही सांस्कृतिक क्षेत्र में भी हुआ।“ (26 फरवरी का ‘द हिन्दू’ देखें)। यद्यपि सांस्कृतिक विकास के परिमाण को आर्थिक विकास की तरह निर्धारित नहीं किया जा सकता फिर भी जो प्रमाण हमरे पास मौजूद है, वे बताते हैं कि सर विदिया का यह मत (मूल्यांकन) तथ्यों के साथ काव्यात्मक अनुज्ञा (अभिव्यक्ति) मात्र नहीं है बल्कि यह कुछ और संकेत करता है। वास्तविकता यह है कि 1993–94 के बाद पष्चिम बंगाल 7.2% वृद्धि दर के साथ (भारत में) दूसरे स्थान पर था और केवल कर्नाटक (8.1%) इससे आगे था। यह भी पता चलता है कि (आर्थिक) वृद्धि की भारतीय (हिन्दू) दर की अपेक्षा मार्क्सवादी दर अच्छी रही है क्योंकि इस दौरान भारत 6.3% की दर से आगे बढ़ा ।

नायपाल, इंडिया टूडे की गुप्त सभा में ”इंडिया टुमॉरो : परसेप्सन वर्सस रियलिटी “
विषय पर बोल रहे थे और उनकी ख्याति को देखते हुए यह आवष्चर्यजनक नहीं है कि उनका मत, बड़ी खबर बन गया। इससे भी अधिक इसने इस रूढ़िबद्ध धारण को
दृढ़ किया कि साम्यवादी षासन के भीतर बीते ढाई दषकों में पष्चिम बंगाल कैसे चला । बिल्कुल स्पष्ट है कि बोध (ज्ञान) और यथार्थ के बीच इतनी बड़ी खाई है कि उसे सच्चाई से पाटने की क्षमता न तो नायपाल में है और न ही इंडिया टूडे में। पूर्व (समय) में इंडिया टूडे ने पंजाब को ”भारत का सर्वोत्तम व्यवस्थित राज्य“ का दर्जा दिया था, जबकि इसकी दषकीय वृद्धि पर मात्र 3. 8% थी जो भारत के सर्वाधिक कम वृद्धि दर वाले राज्य मध्यप्रदेष (2.9%), से थोड़ा ही आगे था।

नायपाल की टिप्पणी का दूसरा भाग और भी बेतुका है, चीन के पास एक राज्य– दो तंत्र की अद्वितीय व्यवस्था हो सकती है, अर्थात चीन की मुख्य भूमि में साम्यवाद और हांगकांग में सुपरिचित अनियंत्रित पूँजीवाद दोनों एक साथ चल सकते हैं पर इसके (चीन के) विपरित भारतीय संवैधानिक व्यवस्था ऐसे किसी लचीलेपन की अनुमति नहीं देती। इसका लिहाज किए बिना कि कौन सा दल एक राज्य का षासन चला रहा है। (जैसे कि पष्चिम बंगाल) जो भी संवैधानिक आदेष (अधिदेष)

होता है, वह हर राज्य में प्रचलित हो जाता है। 1977 ई. से पष्चिम बंगाल के प्रभावी राजनीतिक दल साम्यवादी हो सकते हैं लेकिन देष की चुनी हुई राजनीतिक व्यवस्था, सर्वहारा वर्ग के तानाषाही की (और) या उससे संबंधित किसी अन्य तानाषाही की कोई भी संभावना प्रदान नहीं करती। जो भी हो, आर्थिक व्यवस्था के चुनाव में सर्वसम्मति से महान (अत्यधिक) लचीलापन है लेकिन यह भी संविधान प्रदत्त अधिकारों और कानून के नियमों में बँधा हुआ है।

अगर सचमुच में मार्क्सवद ने हमारी आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया, तो यह पूरे भारत में समान रूप से प्रयुक्त हुआ और केवल पष्चिम बंगाल को इसकी एकमात्र प्रयोगषाला कहना गलत होगा। स्वर्गीय पी. वी. नरसिम्हा राव की कांग्रेस सरकार के द्वारा प्रारंभ किये गये तथा कथित आर्थिक सुधारों के बाद, 1992 से हमारा और भी धार्मिक उदार प्रबंधन रहा है। यह विडंबना ही है कि इस दौर के आर्थिक विकास की होड़ में पष्चिम बंगाल ने अन्य राज्यों से आगे छलांग लगा लिया।

यहाँ तक कि उतर सुधार काल में, प्रति व्यक्ति आय के विकास के मामलें में भी पष्चिम बंगाल ने अन्य राज्यों की अपेक्षा बहुत अच्छा किया। 1993–94 के बाद 4.3% की राष्ट्रव्यापी विकास की तुलना में इसने 5.5% का औसत विकास प्राप्त कर लिया। यह और भी आष्चर्यजनक है जब आपको पता चलता है कि 1991–2001 के मध्य इस काल में पष्चिम बंगाल 1.78% की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि से भी जूम्म रहा था, जो उच्च विकास दर प्राप्त करने वाले तमिलनाडु (की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि) (1.11%) की अपेक्षा बहुत अधिक था। अगर कोई 1981 से जनसंख्या वृद्धि पर विचार करे तो, पष्चिम बंगाल की वृद्धि दर 2.34% थी जो अप्रतिकार रूप से राष्ट्रीय औसत दर 2.51% के नजदीक थी। निसंदेह, बंगलादेष से अनियंत्रणीय, स्पष्ट और अक्षुण्ण प्रवसन (स्थानान्तरण) का इस आपेक्षिक उच्च जनसंख्या वृद्धि में योगदान है। इसके जो भी कारण हो हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि प्रति व्यक्ति आय में बढ़त और ऊँची रही होती अगर नेपाल और बांग्लादेष जैसे पड़ोसी देषों तथा विहार और उड़िसा जैसे पड़ोसी राज्यों से आगमन नहीं हुआ होता।

और भी अधिक दिलस्प तथ्य यह है कि दो बड़े मेट्रो कोलाकाता और मुंबई को निकालने के बाद पष्चिम बंगाल और महाराष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय काफी समान है। कोलकाता को छोड़ने के बाद पष्चिम बंगाल की प्रति व्यक्ति आय 12671 रु. जबकि मुंबई को छोड़कर महाराष्ट्र की प्रति व्यक्ति की आय 13897 रु. है। इस प्रकार अगर हम, एक छण के लिए यह मान भी लें कि वी.एस.

नायपाल की कल्पना (मत) सही है कि, पष्चिम बंगाल में मार्क्सवादी व्यवस्था है, तो उस समय के हमारे राज्यों में से सर्वाधिक षांत (दखलंदाजी विहीन) राज्य महाराष्ट्र की तुलना में इसका प्रदर्षन बहुत बुरा नही है। हम निष्चित रूप से कह सकते हैं कि महाराष्ट्र के अन्य दो बड़े षहर पुणे और नागपुर की प्रति व्यक्ति आय को अलग कर दें तो महाराष्ट्र की प्रति व्यक्ति आय पष्चिम बंगाल की प्रति व्यक्ति आय से कम हो जाएगी। दुर्भाग्यवष बोल चुकने के बाद भी नायपाल की जुबान चलती रहेगी जबकि षब्द ठहर जाएँगे।

यह प्रदर्षन असाधारण (आष्चर्यजनक) है जब आप ग्रामीण पष्चिम बंगाल की प्रभावी (प्रमुख) वास्तविकता के बारे में जानेंगे, जहाँ सींचित क्षेत्रफल के संदर्भ में मात्र 28.1% सींचित क्षेत्र के साथ यह नीचे से तीसरे स्थान पर है। यह तब है जब यह भारत का तीसरा सर्वाधिक सघन कृषि राज्य है जहाँ लगभग इसके 77% भूमि क्षेत्र पर खेती होती है। अगर 89.72% और 65.0% सींचित कृषि क्षेत्रफल वाले क्रमषः पंजाब और हरियाणा की तरह पष्चिम बंगाल को भी केन्द्रीय अर्थव्यवस्था सिंचाई और केन्द्रीय आर्थिक सहायता प्राप्ति से लाभ मिला होता तो यह मानना उचित होगा कि इसका आर्थिक प्रदर्षन भी ऊँचे स्तर का रहा होता। तब एक साम्यवादी व्यवस्था के बिना भी संभवतः पष्चिम बंगालमें साम्यवादी षासन की दीर्घकालीन वृद्धि दर, चीन की वृद्धि दर के निकट हाती।

सिंचाई, कृषि उत्पादकता और विकास के बीच संबंध सर्वज्ञात है और यहाँ विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। सिंचाई की निम्न मात्रा के बावजूद पष्चिम बंगाल भारत का तीसरा सर्वाधिक औसत उत्पादक है जिसका 2424 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर उत्पादन, 1739 कि.ग्रा/हेक्टेयर के राष्ट्रीय औसत से निष्चित रूप से अधिक है। यह असफलता के बाद आषाजनक षुरूवात नही है क्योंकि यह श्रेणी 1991 में भी थी। यह स्पष्ट है कि नायपाल का यह दावा कि "बंगाल की आर्थिक प्रगति समाप्त हो गयी है" निराधार है। लेकिन, सभी पाष्चात्य (षीतकालीन) अनिवासी भारतीय बुद्धिजीवियों की तरह नायपाल को भी भारतीय समाचार पत्रों में अच्छा स्थान मिलता है और उनके षब्द बहुतों के लिए वेदवाक्य बन जाते हैं जो महत्वपूर्ण है।

पष्चिम बंगाल की केवल कृषि– उत्पादकता की ऊँचे स्तर की नहीं है बल्कि इसके खाद्यान्न उत्पादन की मात्रा भी उ.प्र. और पंजाब के बाद तीसरे स्थान पर है। उ.प्र. 120.12 लाख हेक्टेयर सींचित क्षेत्र के साथ, जो पूर्ण कृषि क्षेत्रफल का 60.06% है, 43.20 मीलियन टन खाद्यान्न पैदा

करता है। संभव है, अनाजों की यह निम्न उत्पादकता इस कारण हो कि उत्तम सिंचित भूमि क्षेत्र का 20 लाख हेक्टेयर पष्चिमी उत्तर प्रदेष और तराई क्षेत्र में संकेंद्रित है जो गन्ना कृषि के अन्तगर्त है जिसने 2001–2002 में 116.22 मीलियन टन गन्ना पैदा किया। पंजाब जो मुख्यतः एक अनाज उत्पादक राज्य है, अपने 38.47 लाख हेक्टेयर सींचित भूमि से 24.89 मीलियन टन (अनाज) प्रदान करता है, जबकि पष्चिम बंगाल 19.11 लाख हेक्टेयर सींचित खेत्र से 16.50 मीलियन खाद्यान्न पैदा करने में सफलता पाता है।

तब प्रष्न यह है कि क्या पष्चिम बंगाल अच्छा कर सकता है ? अवष्य यह कर सकता है, लेकिन उसके लिए सिंचाई में बहुत अधिक निवेष की जरूरत होगी लेकिन निवेष की मात्रा केन्द्र सरकार के रूख और अवबोधन पर निर्भर करती है। हमारे पास बहुत से प्रमाण है कि केन्द्र सरकार सभी राज्यों के सभी राज्यों के प्रति सद्भावनापूर्ण नहीं होती और पूर्वी क्षेत्र को इसके कारण बहुत हानि उठानी पड़ी है।

कृषि में पष्चिम बंगाल के प्रदर्षन का वास्तविक महत्व तब स्पष्ट हो जाता है जब हम उस राज्य में परिचालन भूमि जोत क्षेत्र के वितरण के प्रतिमान को देखते हैं। 1991–92 में आखिरी बार जब ऐसे आँकड़ों को मिलाया गया था, पष्चिम बंगाल के कुल किसानों के 80.69% छोटे किसान थे जो कुल कृषि क्षेत्र के 39.98% पर अधिकार रखते थे। भरत के लिए यह समलतुल्य आँकड़ा क्रमषः 62. 69% और 15.60% था। प. बंगाल में बड़े जमींदार नहीं थे जबकि 1.33% भारतीय जमींदार 15. 20% कृषि क्षेत्र रखते थे, जो बड़े जमींदार थे। इससे दो तथ्य प्रकट होते हैं (प. बंगाल में) भूमि सुधार अपने तर्कसंगत अन्त की तरफ बढ़ गये थे और लघु आकार के जोत क्षेत्रों की प्रचुरता के बावजूद अपेक्षाकृत उत्पादन दर ऊँचा था।

इसकी तुलना में पंजाब में छोटे किसान कुल क्षेत्रफल के केवल 6.20% का स्वामित्व रखते थे जबकि बड़े किसान 15.79% भूमि के स्वामी थे। इसी प्रकार महाराष्ट्र में कृषि भूमि का 6.66% छोटे किसानों के अधीन था और 20.31 % बड़े किसानों के पास था। एक मात्र दूसरा राज्य जहाँ भूमि सुधार उम्मीद के अनुरूप हुआ वह है केरल। इसके अलावा प. बंगाल सरकार ने अब तक सरकारी कृषि भूमि का 13 लाख एकड़ देहाती, गरीबो और भूमिहीनों में बाँट दिया है। यह राष्ट्रीय स्तर पर वितरित 45 लाख एकड़ भूमि का लगभग 35% भाग है। जब आप इसे इस तथ्य से जोड़ कर

देखते हैं कि पष्चिम बंगाल के पास भारत की कुल भूमि का केवल 3.5% है, तो यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि लगती है।

किसी को श्रीमान वी. एस. नायपाल को बताना चाहिए कि आर्थिक प्रदर्षन पर राय देना निष्चय ही "ए हाउस फॉर मि. विष्वास" लिखने के समान नहीं है। पहले के लिए तथ्य की जरूरत होती है। बाद वाले के लिए कल्पनाषक्ति की जरूरत होती है। स्पष्टतया नायपाल को उसी में लगे रहना चाहिए जिसमें वह निपुण है।

मोहन गुरूस्वामी

ई मेल– mguru@sify.com

मार्च 11, 2005